

कैसे करें चमत्कार... ?

सभी चुटकी बजाकर सबकुछ एक सेकण्ड में हासिल करना चाहते हैं, और यह संभव भी है लेकिन इसके लिए अगर हम कुछ बातों पर अपने आप को सम्पूर्णतः फोकस करें तो यह काम हो सकता है। चमत्कार तो करते हैं हम लेकिन चमत्कारिक बनने के लिए अपने ऊपर बहुत काम करना होता है। आप जादूगर को देखो तो समझ आएगा कि हाथ की सफाई सीखने में उसे सालों लग जाते हैं, लेकिन फिर भी वो चमत्कारिक नहीं बन सकता, सिर्फ दर्शकों तक ही वो सीमित रहता है। सबके दिल पर वो मनोरंजन करने के समय तक ही राज करता है, कुछ दिन बाद लोग उसे भूल जाते हैं। लेकिन चमत्कारिक पुरुषों के ऊपर हम नज़र डालें तो उनके

संकल्प मात्र से ही घटना घट जाती थी। तो आप भी यदि कुछ घटना चाहते हैं तो अपने आप में कुछ आपको जोड़ना पड़ेगा और कुछ अपने से काटना पड़ेगा।

परमात्मा ने हम सभी को सौभाग्यशाली बनाया, हमें मन, बुद्धि दी जिसके अंदर चमत्कार करने की असीम क्षमता है। लेकिन वह क्षमता ऐसा नहीं है कि आज नहीं है, है, लेकिन उसका इस्तेमाल नकारात्मक कार्यों में हो रहा है। हम आपको बताना चाहेंगे, जब कुछ ऐसा घटित होता है जिसको देखकर आपको आश्चर्य होता है, क्या वो आकस्मिक है या इसके पीछे कोई रहस्य है। हम सोचते नहीं हैं बस चमत्कार को नमस्कार करने लग जाते हैं। हमारा मन सिर्फ और सिर्फ वस्तु, व्यक्ति या पदार्थों के आकार को ही

समझता है तथा उसपर अपने आपको केन्द्रित करता है। हर एक पदार्थ अपने आपमें एक ऊर्जा है, लेकिन वो ऊर्जा कितनी मात्रा में हमारा मन रिसीव करता है इसपर निर्भर है। अगर उस वस्तु से अधिक ऊर्जावान मेरा मन होगा तो वो वस्तु मुझे मिल जाएगी। लेकिन आज मन में विचारों का

नकारात्मक चीज़ को मन एक बार रिसीव करता है तो बुद्धि उस बात को स्वीकार करती जाती है। जितनी बार यह पुनरावृत्ति होगी उतनी बार हम उस घटना को परिणाम तक जाने के लिए विवश करते हैं। भावार्थ यह है कि आज बुद्धि को यह बात समझ नहीं आ रही है कि इस दुनिया में चमत्कार

घटती है, लेकिन हमें समझ नहीं आता कि हमने तो कुछ ऐसा किया नहीं तो ऐसा कैसे हो गया।



ब.कु. अनुज, दिल्ली

इस दुनिया में चमत्कार जैसी कोई चीज़ होती नहीं है, सबकुछ कारण तथा उससे उत्पन्न होने वाला परिणाम (cause and effect) है। कोई भी घटना बिना कारण के नहीं घटती है, लेकिन हमें समझ नहीं आता कि हमने तो कुछ ऐसा किया नहीं तो ऐसा कैसे हो गया।

खासकर नकारात्मक विचारों का अम्बार है, और वो चमत्कारिक घटनायें भी लेकर आ रहा है, लेकिन हम समझ नहीं पा रहे हैं। जिस

जैसी कोई चीज़ होती नहीं है, सबकुछ कारण तथा उससे उत्पन्न होने वाला परिणाम (cause and effect) है। कोई भी घटना बिना कारण के नहीं

आज हम सभी मनुष्य मान्यता (बिलीफ सिस्टम), पूर्व घटना (पास्ट एक्सपीरियेंसेज़) तथा अपने निजी अनुभवों के आधार से ही विचार करते हैं। आप सोचें कि जो आप सोच रहे हो क्या वो आपके खुद के विचार हैं या किसी ने आपसे कहा है या कहीं आपने इसे पढ़ा है या कहीं आपने इसको देखा है, उसी आधार से आप उसे मानते आ रहे हैं। अब यहां पर क्या होगा कि जो भी विचार आपने उत्पन्न किया वो ब्रह्माण्ड में एक सेकण्ड में चला - शेष पेज 11 पर

प्रश्न: मैं एक माता हूँ। मेरे बच्चे आपस में लड़ते रहते हैं। मुझे अमृतवेले योग भी नहीं करने देते। मुझे अपनी श्रेष्ठ स्थिति बनानी है। इसके लिए मैं क्या अभ्यास करूँ ?

उत्तर: पुरुषार्थ के मार्ग में किसी के आगे कोई विघ्न है तो किसी के आगे कोई। कल्प के अंत में विघ्न तो होंगे ही। परंतु यदि कोई मनुष्य सहज भाव से चले और स्वयं को स्वमान द्वारा शक्तिशाली बनाये तो विघ्न आएंगे व चले जायेंगे। कुछ बातों को स्वीकार कर लेना ही चाहिए तथा अपनी स्थिति को नहीं बिगाड़ना चाहिए क्योंकि श्रेष्ठ स्थिति से ही परिस्थिति ठीक होगी।

बच्चों का लड़ना समस्या नहीं है, इसे खेल समझो। आप परेशान न हों। वे लड़ें, आप स्वमान में रहो कि मैं एक महान आत्मा हूँ और ये अच्छी आत्माएं हैं। उन्हें दिन में पाँच बार आत्मिक दृष्टि से देखने का अभ्यास करें। इससे उनका चित्त शांत हो जाएगा।

प्रश्न: मैं दस वर्ष से ज्ञान में हूँ, फिर बुरे संग में आकर अज्ञानतावश बहुत विकर्म कर लिये। इस कारण खुशी भी नहीं रहती, योग भी नहीं लगता। इस समस्या से बाहर निकलने के लिए मैं क्या करूँ ?

उत्तर: बुरे संग से बचने का बाबा बहुत इशारा देते हैं। इस कारण विकर्म करने से आप खुश नहीं रहे हैं। आप पास्ट को भूलकर अब आगे की ओर बढ़ो। जितने पाप किये हैं अब उससे 100 गुणा पुण्य कीजिये। यज्ञ सेवा में अपना सहयोग करो। आत्मिक दृष्टि, अशरीरीपन व स्वमान की साधना करना। हर घंटे में तीन बार यह साधना अवश्य करें तब देहभान व दैहिक दृष्टि समाप्त होगी। सवेरे जागते ही 108 बार लिखो - मैं मास्टर सर्वशक्तिमान हूँ व सोने से पूर्व 108 बार लिखें - मैं एक महान आत्मा हूँ। 6 मास तक ये साधनायें अवश्य करें।

दस-दस मिनट बैठकर तीन बार योग का अभ्यास करें। अमृतवेले व मुरली कभी भी मिस न करें।

प्रश्न: मेरी खुशी गुम हो गई है। मुझे लोग बहुत बुरा भला कहते हैं। किसी का बुरा भी नहीं किया, फिर भी मुझे चारों ओर से बुराई ही मिलती है। मुझे सब नष्ट कर देना चाहते हैं, मैं क्या करूँ ?

उत्तर: भगवानुवाच याद करो - स्वमान से श्रेष्ठ स्थिति बनती है व श्रेष्ठ स्थिति से परिस्थितियां स्वतः ही ठीक हो जाती हैं। स्वमान में स्वयं को ले चलो। मैं वही इष्ट देव/देवी हूँ जिसकी मंदिरों में पूजा हो रही है, मैं तो शिव-शक्ति हूँ। इस चिंतन



मन की बातें

- ब.कु. सूर्य

में मस्त हो जाओ। इससे आपकी स्थिति श्रेष्ठ रहेगी।

जितना ध्यान मनुष्यों के शब्द सुनने में लगायेंगे, अगर उतना ही ध्यान भगवान के महावाक्यों के शब्दों पर दो तो कमाल हो जाये।

सोच लो - भगवान ने कहा है कि तुम्हें सदा खुश रहना है। मुझे तो भगवान की ही सुननी है, मनुष्यों के बुरे वचन नहीं। इस जीवन में क्या-क्या मिला ज़रा गहनता से याद करो।

घर बैठे भगवान मिले, ज्ञान-सागर से ही सम्पूर्ण ज्ञान मिला। स्वर्ग का वर्सा जन्मसिद्ध अधिकार हो गया। भगवान से डायरेक्ट पालना मिली। परमात्म-सुख मिला, सर्व अविनाशी खजाने मिले। सोचो कहाँ ये महान प्राप्तियां और कहाँ मूल्यहीन बातें। अपने स्वमान को बढ़ाओ तो आप पर बातों का असर नहीं होगा। परंतु याद रहे स्वयं को व्यर्थ बातों से मुक्त रखना होगा तब सदा खुश रहेंगे।

प्रश्न: मैं एक 20 साल का कुमार हूँ। मैं सदा ही डरा-डरा सा रहता हूँ, गुमसुम सा रहता हूँ। ना

किसी से बात करने की इच्छा होती और ना पढ़ाई में मन लगता है। क्या मैं एक अच्छा इंसान बन सकता हूँ ?

उत्तर: संसार में मानसिक रोग बहुत तेज़ी से बढ़ रहे हैं। इसके बहुत सारे कारण हैं, परंतु इन कारणों में न जाकर आपको कुछ परामर्श दे रहे हैं -

आप कुछ समय प्रतिदिन सेवाकेन्द्र में जाकर वहाँ की सेवाओं में योगदान करें। सेवाओं के बल से शरीर के अंदर कई तरह के हॉर्मोस का बैलेन्स हो जाता है। आप प्रतिदिन क्लास में भी जाएं। भले ही आपका मन ना लगे, पर वहां जाएं। ईश्वरीय महावाक्य भी नोट करें। अच्छे-अच्छे गीत सुनें। घर में रहते हुए भी आपको अच्छे गीत सुनने चाहिए।

आपको अपने ब्रेन को 10 मिनट सुबह और 10 मिनट शाम को एनर्जी देनी है। उसकी विधि है - दोनों हाथ मलते हुए 3 बार याद करें कि मैं मास्टर सर्वशक्तिवान हूँ, फिर अपने दोनों हाथ सिर के दाएं-बाएं एक मिनट के लिए रख दें और यह प्रक्रिया 10 बार करें। फील करें कि मेरे ब्रेन को यह पवित्र किरणें जा रही हैं।

साथ ही 10-10 मिनट 3 बार योगाभ्यास कर लें और पानी चार्ज करके पीयें। पानी चार्ज करने की विधि है - ग्लास में पानी लेकर उसे दृष्टि देते हुए 7 बार याद करें कि मैं परम पवित्र आत्मा हूँ। ऐसे पानी चार्ज करके 5 बार अवश्य पीयें। इसके अलावा रोज सवेरे एक बार उन सभी आत्माओं से क्षमा याचना करें जिन्हें पूर्व जन्मों में आपने कष्ट दिया है। इससे उन सभी आत्माओं से जो बैड एनर्जी आपको आ रही है, वो बंद हो जाएगी। ये सभी अभ्यास 3 मास करें तो आप ठीक हो जायेंगे और अच्छा इंसान बन जायेंगे, परंतु अच्छा होने के बाद आपको ज्ञान-योग को दृढ़ता से अपने जीवन में आगे बढ़ाना होगा।

Contact e-mail - bksurya8@yahoo.com

Peace of Mind

DD डाकघर
डी टूरटॉन के
DTH पर
GOD TV में
और DISH TV

पर GODTV चैनल पर भी डी टी वी ऑफ
माइंड चैनल शाम को 7.30 pm से
10.00pm तक देख सकते हैं अधिक
जानकारी के संपर्क करें...

Cell: 8104 777111/941415 1111

7 कदम राजयोग की ओर...

क्या सरिता

क्या सरिता

7 कदम राजयोग

हैपिनेस इन्डेक्स

सम्पत्ता के लिए

योग पुरुषार्थ

गीता ज्ञान का आध्यात्मिक रहस्य

राजयोग मेडिटेशन

मन्त्र की बातें

For Cable & DTH
+91 8104777111

TATA SKY 192 **airtel digital TV 686** **VIDEOCON 497** **RELIANCE Digital TV 171**

Peace of Mind "C" Band, MPEG4 DVB-S2 Receiver-FRQ: 4054, POL: H, SYM: 13230, INSAT: 4A, DEG:83*E